उत्तराधिकारी बने। लोक में पाबूजी को लक्ष्मण का अवतार माना जाता है। जूना ग्राम धांधल की जागीर था। धांधल की दो पत्नियों से 24 पुत्र थे। बड़े बेटे उदयसी को जूना और बूहड़दे/खीमड़दे को कोलू की जागीर मिली। पाबूजी बूहड़दे के छोटे भाई थे। लोकाख्यानों के अनुसार पाबूजी अप्सरा के पुत्र थे। वे सामाजिक समरसता के लिए समर्पित थे। एक शूरवीर, दृढप्रतिज्ञ और गौरक्षक के रूप में उनकी प्रसिद्धि है। लोक गाथाओं के अनुसार चौबीस वर्ष की युवा अवस्था में ही गौ-रक्षा करते हुए उन्होंने प्राण त्याग दिए थे। उनकी कीर्ति को प्रकाशित करने वाले डिंगल में अनेक छंद हैं, किन्तु मोडजीआशिया कृत 'पाबूप्रकाश' डिंगल का महाकाव्य है। डिंगल काव्य में रामनाथजी कविया के भी दोहे पाबूजी पर सुप्रसिद्ध हैं। राजस्थानी लोक-नाट्यों में पाबूजी की पड़ या फड़ अत्यंत प्रसिद्ध है।

लोक देवताओं में बाबा रामदेवजी की लोकप्रियता दूर-दूर तक व्याप्त है। रामदेवजी का जन्म तंवर वंशीय क्षत्रिय कुल में महाराज अजमल जी के घर हुआ। रामदेवजी की विलक्षणता बचपन में ही दिखाई देने लगी थी। उन्होंने धधकती भट्टी पर उफनता दूध का चारा बड़ी सहजता से उतारा। बिणजारे की बाळद में खांड का नमक और फिर से नमक का खांड करना, पांच पीरों को उनके खानदानी कटोरों में ही भोजन कराना आदि चमत्कारिक परचों से उनकी विलक्षणता का पता चलता है। इसी तरह पडियारों से लड़ाई उनकी वीरता की परिचायक है। बाबा रामदेवजी के जीवन का प्रमुख संदेश है, परस्पर विरोध और भेदभाव से मुक्त सामाजिक समरसता। रामदेव जी ने एक अनाथ और कथित अस्पृश्य कन्या को अपने घर शरण देकर उसका पालन-पोषण किया। उसे सगी बहन से बढ़कर स्नेह और सम्मान दिया। किन्तु इससे कथित उच्च कुल के लोग नाराज हो गये। ऐसा होने पर भी रामदेवजी ने उस बहिन को नहीं ठुकराया, वरन् अपने महल को छोड़कर उन्होंने नई नगरी बसाई। उन्होंने आजीवन सामाजिक समरसता की अलख जगाई।

भादों सुदी दूज और दसमी को बाबा रामदेवजी को बड़े हर्षोल्लास के साथ याद किया जाता है। जगह-जगह मेले लगते हैं। राजस्थान के बीकानेर जिले में स्थित रूणीजाराम देवरा में लगने वाला विशाल मेला पूरे देश में विख्यात है। चारों ओर बाबा रामदेवजी की ख्याति फैली हुई है। समूचे मालवा, राजस्थान, गुजरात सहित देश के अनेक भागों में उन्हें पूजा जाता है। अत्यंत आस्था और भक्ति भाव के साथ उनके गीत गाए जाते हैं।

लोक देवताओं में तेजाजी व ताकाजी जी भी बहुत अधिक पूज्य हैं। ताकाजी जी तक्षक जी का ही तद्भव रूप है। लोक देवता वीर तेजाजी के गीत आज भी गांव-गांव में लोग गाते हैं। तेजा दशमी पर उनके थानकों पर छतरी चढ़ाई जाती है। तेजाजी-ताकाजी के थानकों पर लगने वाले मेलों में लोक गीत, कथा, नाट्य आदि अनेक रूपों में लोक आस्था प्रतिबिंबित होती है।

वीरगति से देवगति में आए श्री कल्ला जी राठौड़ के थानक आज गांव-गांव में हैं। कल्ला जी का मुख्य स्थान रुन्देला में है। रुन्देला उदयपुर जिले की सलूम्बर तहसील की नोली पंचायत का एक गांव है। लगभग चार सौ घरों की बस्ती वाले रुन्देला में सर्वाधिक राजपूत समाज के घर है। यहां के मेड़तिया राजपूत कल्ला जी के वंशज हैं। वर्तमान में इन्हीं के वंशज यहां पूजा-पाठ करते है। कल्ला जी के थानकों पर अनेक लोकाभिव्यक्तियां मुखरित होती हैं। लोक मान्यता के अनुसार कल्ला जी के नाम से अथवा उन्हें पुकारने पर वे अपने भक्तों का हजार कोस दूर से भी दुःख हरते हैं। मेवाड़ मालवा, वागड़, गुजरात सहित देश भर में इनके भक्त हैं।

पश्चिम एवं मध्य भारत में बसे बहुत बड़े लोक समुदाय के आस्था-केंद्र लोक देवता जूण कुंवर जी से जुड़ी लोक कथाओं की जातीय चेतना, इतिहास और लोक-संस्कृति के साथ जैविक अंतर्क्रिया बनी हुई है। मल्हारी मार्तंड के रूप में बहुपूज्य लोक देवता खांडोबा या खांडेराव से जुड़ी लोक साहित्य में ऐतिहासिक घटनाओं के साथ युग जीवन की विविध छबियां सहज उपलब्ध हैं। कई जाति-समुदायों से जुड़ी विशिष्ट प्रसंग और घटनाओं में ऐतिहासिक सन्दर्भ बिखरे पड़े हैं, जिनकी सूक्ष्म पड़ताल बेहद जरूरी है।

जाहिर है लोक देवी देवता सम्बन्धी लोकाख्यानों और अनुश्रुतियों का मालवा, राजस्थान, गुजरात सहित विविध लोकांचलों के जनजीवन और लोक परंपराओं से गहरा संबंध बना हुआ है। वस्तुतः किसी भी लोकांचल की लोक संस्कृति और परम्पराएं महज संग्रहालयी वस्तु नहीं हैं। उनका इस क्षेत्र की जातीय स्मृतियों, इतिहास, पुरातत्त्व और जीवन दृष्टि से गहरा नाता होता है। लोक देवता सम्बन्धी साहित्य, संस्कृति और परम्पराएं बीते हुए अतीत के अवशेष नहीं, निरंतर बहता हुआ वर्तमान है। इसके साथ ही इतिहास की टूटी कड़ियों और मौन को भरने में इस तरह के लोक-गीतों, कथाओं, गाथाओं और विविध लोकाभिव्यक्तियों में मुखरित मौखिक इतिहास अत्यंत उल्लेखनीय सिद्ध हो रहा है। लोक देवता सम्बन्धी लोक साहित्य, कलाभिव्यक्तियों और संस्कृति का सन्देश साफ है कि समावेशी दृष्टिकोण से ही लोक को लेकर विचार किया जाना चाहिए। ■■

गोगाजी